S.S. College, Jehanabad
Class - B.A. I (Hons.)
Subject - Psychology paper - 1
Teacher's Name - Dr. Viveka Nand Sharma
e-content for two days | Date - 15.06.2021
16.06.2021

Topic - Thinking.

Language and Thought

चिन्तन एक जटिल मानसिक प्रक्रिया है जिसके सहारे प्राणी किसी समस्या का समाधान करता है। चिन्तन में भाषा का क्या महत्व है, यह प्रारम्भ से ही विवादस्पद विषय रहा है। एक विचारधारा यह है कि चिन्तन के लिए भाषा न केवल सहायक है बल्कि आवश्यक भी है। इस विचार के समर्थकों के अनुसार भाषा के अभाव में चिन्तन संभव नहीं है। दूसरा विचार यह है कि चिन्तन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। पहले विचार के समर्थकों में Watson (1914) प्रमुख हैं। इन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि चिन्तन के लिए भाषा आवश्यक है और भाषा एवं चिन्तन में कोई मौलिक भेद नहीं है। उनके अनुसार भाषा के माध्यम से ही चिन्तन करते हैं। उन्होंने चिन्तन को अव्यक्त भाषण (implicit speech), अन्तःभाषण (Inner speech) या अवाचिक भाषण (Sub-vocal speech) की संज्ञा दी है। उन्होंने बच्चों के चिन्तन का उदाहरण देते हुए कहा कि छोटे बच्चे गणित के प्रश्नों का समाधान करते समय अपनी उँगलियों पर बोलते रहते हैं। परन्तु, वही बच्चे बड़े होने पर मन-ही-मन बोल-बोल कर अपनी समस्या का समाधान करते हैं। अतः उक्त अध्ययनों से यही चिन्तन में भाषा का महत्व प्रमाणित होता है।

Sapir की प्राक्कल्पना यह थी कि भाषा द्वारा चिन्तन की प्रक्रिया काफी हद तक प्रभावित होती है। इस प्राक्कल्पना का समर्थन Bruner (1964) के प्रयोगात्मक अध्ययनों द्वारा होता है। इन्होंने शिशुओं तथा Pre-School बच्चों पर प्रयोग करके यह पाया कि इन बच्चों के चिन्तन की प्रक्रिया तथा संज्ञानात्मक विकास अधिक सीमित इसलिए होता है क्योंकि इनकी भाषा पूर्णरूपेण विकसित नहीं होती है। इन्होंने अपने अध्ययन में देखा कि 6-7 साल की उम्र के बच्चे सोचने के लिए काफी हद तक भाषा का उपयोग प्रारम्भ कर देते हैं। चूँकि प्राक्-स्कूली बच्चों की उम्र 6 साल से नीचे होती है और उनमें भाषा का विकास पूर्ण नहीं रहता, अतः उनका संज्ञानात्मक विकास विशेषरूप से चिन्तन की प्रक्रिया ठीक ढंग से नहीं हो पाती है। इससे स्पष्ट होता है कि भाषा द्वारा चिन्तन की प्रक्रिया प्रभावित होती है। Bernstein (1958) ने भी गरीब तथा धनी परिवार के बच्चों के

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA

चिन्तन का एक तुलनात्मक अध्ययन किया। इनके अनुसार अशिक्षित परिवार के बच्चों की भाषा सीमित एवं अविकसित होती है तथा ऐसे बच्चों का अमूर्तात्मक चिन्तन अपूर्ण होता है। ऐसे बच्चों के चिन्तन एवं तर्क करने की क्षमता शिक्षित परिवार के बच्चों की तर्कक्षमता की अपेक्षाकृत कम होते पाया गया है।

Whorf (1956) ने अपने गुरु Sapir के इस कथन को कि भाषा द्वारा चिन्तन प्रभावित होती है और अधिक स्पष्ट करते हुए कहा कि भाषा द्वारा चिन्तन प्रभावित ही नहीं बल्कि निर्धारित भी होती है। Whorf की परिकल्पना यह थी कि भाषा का विकास चिन्तन की प्रक्रिया के पहले होता है तथा चिन्तन की प्रकृति का निर्धारण पूर्णतया भाषा द्वारा ही होता है। इसे language determinism (भाषा नियतिवाद) कहा गया और मनोवैज्ञानिकों के बीच Whorf hypothesis के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस परिकल्पना के अनुसार, हमारी अवधारणात्मक चिन्तन भाषा द्वारा ही निर्धारित होता है। Whorf Hypothesis के समर्थन में अनेकों प्रयोगात्मक अध्ययन हुए हैं। Whorf ने अपने एक अध्ययन के अंतर्गत जाति Eskimo तथा अंग्रेजी भाषा बोलनेवाले व्यक्तियों के प्रत्यक्षण एवं चिन्तन की प्रक्रियाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। Eskimo की भाषा में बर्फ (Snow) के लिए कम-से-कम 12 शब्द होते हैं जिनका अर्थ बर्फ ही होता है परन्तु उनका प्रयोग भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्फों को पहचानने तथा प्रत्यक्षण करने में होता है। अंग्रेजी भाषा में बर्फ के लिए केवल एक या दो शब्द हैं। Whorf ने अपने अध्ययन में पाया कि जितने स्पष्ट ढंग से भिन्न-भिन्न प्रकार के बर्फों का प्रत्यक्षण एवं उसके बारे में चिन्तन Eskimo द्वारा किया जाता है उतना स्पष्ट प्रत्यक्षण एवं चिन्तन अंग्रेजी बोलने वाले व्यक्तियों द्वारा नहीं किया जाता है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट है कि भाषा विकसित होने पर प्रत्यक्षण एवं चिन्तन भी स्पष्ट होते हैं।

Judson, Cofer & Gelfand (1966) ने अपने अध्ययन में यह देखा कि जिन प्रयोज्यों ने समस्या से सम्बन्धित शब्दों को समस्या से पहले सीखा, उन्होंने समस्या को अधिक आसानी से समाधान किया। इन अध्ययनों से ये समस्या-समाधान में शाब्दिक या भाषिक मध्यस्थता के महत्व पर प्रकाश पड़ता है। Brain (1963) ने भी चिन्तन में भाषा के महत्व को स्वीकार किया है। उनके अनुसार, भाषा नियमों का प्रभाव चिन्तन पर पड़ता है और भाषा नियमों का ज्ञान चिन्तन को [illegible] देता है। इसी तरह बच्चों में अमूर्त चिन्तन के लिए उपयुक्त एवं पर्याप्त [illegible]र तथा व्यवहार के नियमों ईमानदारी की जानकारी आवश्यक [illegible] अमूर्त चिन्तन बहुत हद तक भाषा पर आधारित है। Milner (1988) ने अपने अध्ययन में पाया कि बालकों के समक्ष रखे

उसी प्रकार की विद्युत क्रिया होती है जिस तरह शब्दों को बोलते समय। उन्होंने प्रयोज्यों के कंठ पर electrode लगा दिया और उनसे यह कहा गया कि वे समस्या के समाधान के बारे में चिंतन करें। देखा गया कि उनके कंठ में उसी प्रकार का क्रिया-प्रवाह उत्पन्न हुआ जिस तरह वास्तविक-शब्दों को बोलते समय उत्पन्न होता है। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि चिंतन वास्तव में sub-vocal speech है।

इसकी और मनोवैज्ञानिकों की एक बड़ी संख्या—Watson के विचार से सहमत नहीं है। इन मनोवैज्ञानिकों के अनुसार चिंतन के लिए भाषा आवश्यक नहीं है। उनका कहना है कि चिंतन तथा भाषा का विकास स्वतंत्र रूप से होता है। अतः चिंतन के लिए भाषा सहायक हो सकती है, आवश्यक नहीं। Robertson & Younis (1969) ने बहरे-गूंगे बच्चे तथा सामान्य बच्चों के चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि समस्या-समाधान तथा संप्रत्यय-निर्माण के लिए भाषा सहायक हो सकती है, परन्तु यह इस प्रकार की मानसिक-योग्यताओं के लिए आवश्यक नहीं है। Atkinson et al. (1998) ने यह बताया कि "हम यह निश्चित रूप से कह सकते हैं कि भाषा तथा चिंतन सहसंबंधित हैं, परन्तु समान नहीं।" Clark (1973) ने भी यह बताया कि चिंतन की प्रक्रिया बालक में पहले होती है और बाद में उससे संबंधित शब्दों का विकास होता है। इस तरह चिंतन प्रक्रिया के लिए भाषा आवश्यक नहीं है क्योंकि चिंतन पहले होता है और भाषा का प्रयोग बाद में। इस तरह से चिंतन की प्रक्रिया भाषा द्वारा प्रतिबिम्बित होती है न कि निर्धारित होती है। Brown (1965) ने भी यह बताया कि भाषा व्यक्ति के चिंतन में सहायक है, परन्तु भाषा के बिना भी चिंतन संभव है। इन्होंने Conklin (1954) के विचारों की व्याख्या करते हुए कहा कि जिस व्यक्ति का शब्द-भंडार बड़ा होता है, वह किसी चीज के बारे में अनेक तरह से सोचने में सक्षम होता है। लेकिन जिसका शब्द-भंडार सीमित होता है, वह अधिक तरीकों से नहीं सोच पाता है। इसका मतलब यह नहीं हुआ कि भाषा चिंतन के लिए आवश्यक है बल्कि भाषा चिंतन में सहायक होती है।

इस तरह उपर्युक्त विवरणों से यह स्पष्ट है कि इसमें कोई शक नहीं है कि भाषा द्वारा चिंतन की प्रक्रिया प्रभावित या निर्धारित होती है। लेकिन इसके आधार पर यह कहना कि सभी प्रकार चिंतन-भाषा पर ही निर्भर होते हैं, सही नहीं है।

SHOT ON REDMI Y3
AI DUAL CAMERA